



धन एवं वित्त रिपोर्ट

आपकी आर्थिक समृद्धि, धन-योग व निवेश का विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:03

॥ पारस वाणी ॥

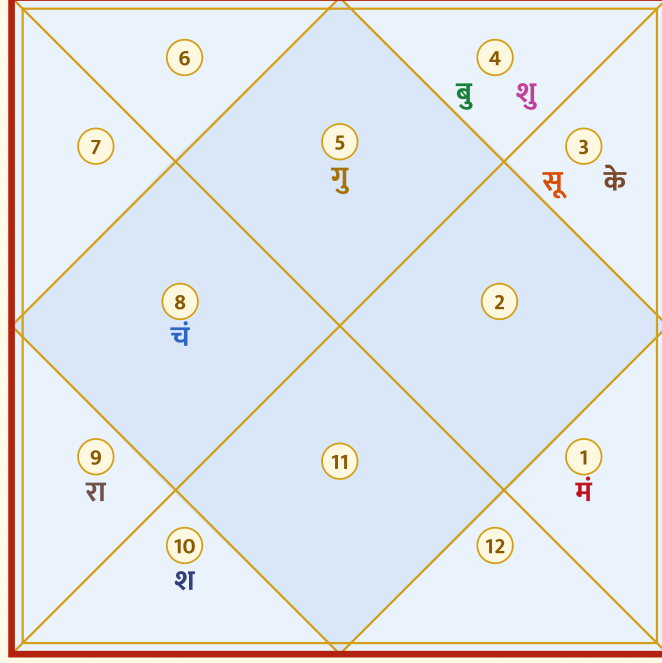
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



धन-कुंडली परिचय

अध्याय 1

धन-कुंडली परिचय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में धन और समृद्धि का प्रश्न जितना सीधा दिखता है, उतना है नहीं — यहाँ **संघर्ष और शक्ति दोनों एक साथ बैठे हैं**। लग्न सिंह है, जो स्वयं में एक राजसी आधार है; और इसी कुंडली में गजकेसरी जैसा दुर्लभ योग भी है। पर धन के भाव की स्थिति थोड़ी माँग करती है — यह कुंडली "कमाने वाली" है, "बैठे-बिठाए मिलने वाली" नहीं।

धनेश कहाँ हैं — और क्या कह रहे हैं?

आपका द्वितीय भाव (धन, संचय, वाणी) कन्या राशि में है और उसके स्वामी **बुध बारहवें भाव में बैठे हैं — कर्क राशि में, शत्रु राशि में**। बारहवाँ भाव व्यय का भाव है। अर्थात् जो कमाया, उसमें से एक हिस्सा बाहर जाता रहेगा — यात्रा, स्वास्थ्य, या अनदेखे खर्चों में। **बुध की अवस्था कुमार है**, यानी बल बन रहा है, पर अभी पूरी परिपक्वता नहीं आई। अच्छी बात यह है कि बुध महादशा (फरवरी 2027 से दिसम्बर 2027) में इन्हीं की अंतर्दशा आने वाली है — उस समय धन-विषय पर अधिक स्पष्टता और नियंत्रण आएगा।

इसके साथ ही **बुध पर मंगल की दृष्टि** है (मंगल भाव 9 से बारहवें को देखते हैं) — यह व्यय को थोड़ा अचानक और आवेगपूर्ण बनाती है। खर्च करने से पहले एक पल रुकना आपके लिए सबसे बड़ा वित्तीय उपाय है।

लाभ भाव — कमाई की असली ताकत

एकादश भाव (लाभ, आय) में **सूर्य और केतु** की युति है। सूर्य का षड्बल भरपूर है (9.86 रूप), पर अवस्था मृत है — इसका अर्थ यह है कि आय के स्रोत हैं, पर उनसे पूरा फल समय पर नहीं मिलता। **वेशी योग** भी इसी स्थान से बनता है — सूर्य से द्वितीय में ग्रह होने से — जो आपको सत्यनिष्ठ और यशस्वी बनाता है, पर धन-लाभ में थोड़ा विलंब देता है। केतु की युति इस भाव को कभी-कभी अनिश्चित बनाती है — कमाई आती है, पर हाथ में टिकती कम है।

अष्टकवर्ग में एकादश भाव के शोधित बिंदु केवल 3 हैं — यह स्पष्ट संकेत है कि लाभ भाव की ज़मीन कमज़ोर है। जो भी शुभ दशा हो, उसका फल यहाँ पूरा नहीं उतरता — प्रयास अधिक, फल अपेक्षाकृत कम।

भाग्य और गुरु — असली आधार

नवम भाव (भाग्य) में **मंगल स्वराशि मेष** में बैठे हैं — यह बड़ी बात है। भाग्येश का अपने ही भाव में होना भाग्य को सक्रिय रखता है, विशेषकर **साहस और परिश्रम के बल पर**। यह कुंडली उन्हें नहीं देती जो हाथ पर हाथ रखकर बैठें — यह उन्हें देती है जो मैदान में उतरते हैं।

धन के कारक ग्रह **गुरु लग्न (भाव 1) में मित्र राशि सिंह में बैठे हैं** — **युवा अवस्था में, भरपूर बल के साथ**। यह गजकेसरी योग का हिस्सा है। गुरु की दृष्टि भाव 5, 7 और 9 पर है — पंचम पर दृष्टि बुद्धि व निवेश को, नवम पर भाग्य को बल देती है। **होरा कुंडली (D2) में गुरु कर्क लग्न में हैं** — यह धन-विशेष कुंडली में शुभ स्थान है।

मुख्य बातें

- **धनेश बुध बारहवें भाव में हैं** — कमाई होगी, पर व्यय पर नियंत्रण ज़रूरी है; खर्च सोच-समझकर करें
- **लाभ भाव के शोधित बिंदु मात्र 3** — परिश्रम अधिक, फल के लिए धैर्य चाहिए
- **भाग्येश मंगल स्वराशि में** — साहस और श्रम से भाग्य खुलता है, सौभाग्य प्रतीक्षा से नहीं
- **गुरु बलवान व युवा** — धन का नैसर्गिक कारक आपकी कुंडली में शुभ स्थिति में है; दीर्घकालीन स्थिरता इसी से मिलेगी
- **फ़रवरी 2027 से बुध अंतर्दशा** — धन-प्रबंधन और आय के नए स्रोतों पर नियंत्रण उस समय बेहतर होगा

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात् केन्द्रगतो यदि ।

अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥

बुध, गुरु या शुक्र में से एक भी लग्न से केन्द्र में हो, तो वह सारे अरिष्ट को वैसे मिटा देता है जैसे सूर्य अंधकार को।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १०



आपके धन-योग व लाभ-स्थिति

अ ध्या य 2

आपके धन-योग व लाभ-स्थिति

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में धन-योग की नींव मज़बूत है — गुरु लग्न में युवा अवस्था में विराजमान हैं, और मंगल नवम भाव में स्वराशि में बैठे हैं। यह दोनों मिलकर एक ऐसा आधार बनाते हैं जहाँ धन आता है, पर उसका रास्ता सीधा नहीं — परिश्रम और धैर्य से

खुलता है।

धनेश की स्थिति — धन-भाव का स्वामी कहाँ है?

आपका धन-भाव (दूसरा भाव) कन्या राशि का है, और उसके स्वामी बुध हैं। बुध अभी बारहवें भाव में कर्क राशि में बैठे हैं — शत्रु राशि में। इसका सीधा अर्थ यह है कि **धन बनता है, पर उसका एक हिस्सा व्यय के रूप में निकलता रहता है**। बारहवाँ भाव खर्च, विदेश और अदृश्य लागत का भाव है — तो कमाई और व्यय के बीच का संतुलन बनाए रखना आपके लिए एक स्थायी चुनौती रहती है।

होरा कुंडली (D2 — धन व संपत्ति की विशेष कुंडली) में देखें तो बुध कर्क राशि में नहीं, सिंह भाव 2 में जाते हैं — अर्थात् धन की असली परीक्षा परिवार और प्रतिष्ठा के क्षेत्र में होती है। इसका मतलब है कि आपकी आमदनी परिवार की जरूरतों और सामाजिक स्तर बनाए रखने में बड़े पैमाने पर जाती है — यह कोई कमजोरी नहीं, यही आपकी प्राथमिकता है।

बुध की अवस्था कुमार है — यानी **आधा फल**। धनेश का यह रूप बताता है कि धन-क्षेत्र में स्थिरता धीरे-धीरे आती है, एकाएक नहीं।

लाभ-भाव की स्थिति — आय का द्वार कितना खुला है?

ग्यारहवाँ भाव (लाभ का भाव) आपके लिए मिथुन राशि का है। यहाँ सूर्य विराजमान हैं — और इस भाव के स्वामी बुध बारहवें में हैं। **सूर्य का ग्यारहवें भाव में होना एक बड़ी विशेषता है — यह बताता है कि आपकी कमाई का एक महत्वपूर्ण स्रोत आपकी व्यक्तिगत पहचान, नेतृत्व या किसी संस्था से जुड़ा हुआ है।**

सूर्य षड्बल में सबसे बलवान ग्रह हैं (9.86 रूप), पर उनकी अवस्था मृत है — इससे यह फल पूरी तरह खिलने में रुकावट आती है। साथ ही केतु भी ग्यारहवें भाव में हैं, जो लाभ के प्रति एक विचित्र उदासीनता देते हैं — **आप कमा सकते हैं, पर धन को रोकने या बढ़ाने की ओर मन स्वाभाविक रूप से नहीं जाता।**

शुभ संकेत यह है कि शोधित अष्टकवर्ग में ग्यारहवें भाव के बिंदु 3 हैं — यह कम है। इसका अर्थ है कि **लाभ-भाव में गोचर ग्रहों का फल साधारण रहता है; बड़ी आय के लिए विशेष प्रयास और सही दशा-काल की प्रतीक्षा करनी होती है।**

धन-योग की असली शक्ति — गुरु और मंगल का संयोग

आपकी कुंडली में **गजकेसरी योग** सक्रिय है — गुरु लग्न में हैं और चंद्र से केंद्र में। यह योग यश, बुद्धि और धन की संभावना देता है। गुरु यहाँ युवा अवस्था में हैं और बल भरपूर है (9.49 रूप) — इसलिए यह योग कागज़ी नहीं, जीवन में दिखने वाला है।

इससे भी महत्वपूर्ण — **मंगल नवम भाव में स्वराशि में हैं।** नवम भाव भाग्य का है, और भाग्येश का अपने ही भाव में स्वराशि में होना बताता है कि आपका भाग्य जब जागता है, तो जोर से जागता है। यह "हर्ष विपरीत राजयोग" — जो कुंडली में है — इसी को और पुष्ट करता है: **कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति।**

नवांश कुंडली (D9) में गुरु कन्या लग्न में हैं — वर्गोत्तम स्थिति के निकट। यह गुरु के फल को और टिकाऊ बनाता है — **जो धन गुरु के कारण आएगा (ज्ञान, परामर्श, शिक्षा, या विस्तार से) वह स्थायी होगा।**

गुरु की दृष्टि पाँचवें भाव पर पड़ रही है — पाँचवाँ भाव बुद्धि और निवेश का भाव भी है। यह बताता है कि **बुद्धि-आधारित निर्णयों से धन बनाने की संभावना आपमें है।**

अभी का समय — दशा और गोचर क्या कह रहे हैं?

अभी सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। शनि छठे भाव में स्वराशि में वक्री हैं — छठा भाव परिश्रम, सेवा और ऋण का है। **यह दौर मेहनत का है, त्वरित लाभ का नहीं।** शनि का वक्री होना यह भी बताता है कि पुराने प्रयासों का हिसाब अभी बन रहा है।

गोचर में गुरु अभी कर्क राशि में हैं (जून 2026 से अक्टूबर 2026 तक) — यह आपके लग्न से बारहवें भाव में पड़ता है। बारहवाँ भाव लाभ-भाव से ठीक पहले का है — **गुरु अभी 'तैयारी' करा रहे हैं; नवम्बर 2026 के बाद जब गुरु सिंह राशि में आएँगे, तब वे आपके लग्न में आएँगे और उसके बाद धनु में (भाव 5) — तब धन व अवसर दोनों के द्वार अधिक खुलेंगे।**

योगिनी दशा में भद्रिका (बुध) चल रही है — वाणी, व्यापार और लेन-देन में गति। पर विंशोत्तरी में शनि अंतर्दशा — इसलिए संकेत मिश्रित हैं: **बात बनती है, पर निष्पादन में समय लगता है।**

मुख्य बातें

- **धन-योग मज़बूत है** — गजकेसरी, भाग्येश स्वराशि में, और गुरु युवा अवस्था में लग्न में। पर यह योग धैर्य माँगता है।
- **धनेश बुध बारहवें भाव में हैं** — कमाई का एक हिस्सा व्यय में जाता रहेगा; इसे रोकने के लिए खर्च पर नज़र ज़रूरी है।
- **लाभ-भाव में सूर्य हैं** — पहचान और नेतृत्व से आय का रास्ता खुलता है; केतु के साथ होने से धन-संचय की ओर मन को जानबूझकर मोड़ना होगा।
- **अभी का समय (फ़रवरी 2027 तक) श्रम और स्थिरता का है** — बड़ा विस्तार फ़रवरी 2027 में बुध अंतर्दशा से और फिर 2029 में चंद्र महादशा के आगमन से अधिक संभावित है।
- **बुद्धि और ज्ञान-आधारित काम** — गुरु की दृष्टि पाँचवें भाव पर है; परामर्श, शिक्षा या कौशल से आय आपके लिए सबसे अनुकूल मार्ग है।



आय के स्रोत व दिशा

अ ध्या य 3

आय के स्रोत व दिशा

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में आय का सबसे बड़ा द्वार **ग्यारहवाँ भाव** है — और वहाँ स्वयं सूर्य विराजमान हैं। यह अपने-आप में एक बड़ी बात है: लग्नेश और लाभेश का संयोग लाभ-भाव में। पर इसी भाव में केतु भी हैं, जो एक तरफ़ असाधारण अंतर्दृष्टि देते हैं और दूसरी तरफ़ आय में उतार-चढ़ाव का कारण भी बनते हैं।

आय का मुख्य द्वार — ग्यारहवाँ भाव और सूर्य

आपके लाभ-भाव में सूर्य बैठे हैं और केतु उनके साथ। सूर्य यहाँ **वेशी योग** बना रहे हैं (द्वितीय भाव में ग्रह होने से), जो सत्यनिष्ठा और यश से आय का मार्ग खोलता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि **आपकी कमाई का सबसे बड़ा रास्ता आपकी प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व और नेतृत्व से जुड़ा है** — जहाँ लोग आपको देखकर, आप पर भरोसा करके काम देते हैं।

केतु के साथ होने से आय कभी-कभी अप्रत्याशित स्रोतों से आती है — कोई पुराना सम्बंध, कोई अनजान अवसर। पर यही केतु मन को असंतुष्ट भी रखता है, जिससे लगता है कि कमाई "पर्याप्त नहीं"। यह भाव की वास्तविकता कम और मन का खेल अधिक है।

ग्यारहवें भाव के शोधित अष्टकवर्ग-बिंदु **३ हैं** — यह संख्या कम है, जिसका अर्थ है कि गोचर-ग्रह यहाँ से अपेक्षित जितना फल नहीं देते। आय बनती है, पर बड़े उछाल के लिए प्रयास अधिक लगता है।

धन-भाव की स्थिति — आय टिकती कहाँ है?

धन का दूसरा भाव आपके लिए कन्या राशि का है, जिसके स्वामी **बुध** हैं — और बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि (कर्क) में बैठे हैं। बुध की अवस्था कुमार है, जिसका अर्थ है आधा फल। यानी **आय आती है, पर बचत और संचय में मेहनत लगती है** — पैसा हाथ से फिसलने की प्रवृत्ति रहती है, क्योंकि धनेश व्यय-भाव में हैं।

बारहवें भाव में बुध और शुक्र दोनों बैठे हैं। यह स्थिति बताती है कि **खर्च आपकी आय से पहले आते हैं** — यात्रा, आराम, घर की सुख-सुविधा, या किसी अदृश्य मद में। यह कोई दोष नहीं, बस इस कुंडली की प्रकृति है — जानकर चलें तो सँभाल सकते हैं।

भाग्य-भाव (नवम) में **मंगल अपनी ही राशि मेष में बैठे हैं** — यह एक बलवान स्थिति है। इसका अर्थ है कि **भाग्य आपको मेहनत और**

साहस के रास्ते मिलता है, विरासत या आसान अवसर से कम। जो काम में जान लगाते हैं, वहाँ आपका भाग्य खुलता है।

किस क्षेत्र से आय का संकेत?

आपकी कुंडली कुछ विशेष दिशाएँ सुझाती है:

- **लग्न में गुरु (सिंह)** — ज्ञान, शिक्षा, परामर्श, प्रबंधन और किसी बड़े संस्थान से जुड़ाव आपको आय देता है। गुरु युवा अवस्था में और भरपूर बल में हैं — यह आपकी सबसे बड़ी पूँजी है।
- **नवम में स्वराशि मंगल** — रियल एस्टेट, भूमि, तकनीक, इंजीनियरिंग, प्रशासन या किसी ऐसे काम में जहाँ निर्णय लेने की क्षमता चाहिए।
- **दशमांश (D10) में लग्न कुम्भ और सूर्य लग्न में** — करियर में नेतृत्व की भूमिका, जहाँ आप सामने खड़े हों। D10 में मंगल एकादश भाव में है — कार्यक्षेत्र से लाभ की पुष्टि।
- **होरा (D2) में गुरु, सूर्य और मंगल एक साथ लग्न में** — धन का मूल आधार आपकी बुद्धि, व्यक्तित्व और ऊर्जा है, न केवल बाज़ार या परिस्थिति।

अभी का समय — फ़रवरी 2027 तक

अभी सूर्य महादशा में **शनि की अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2027 तक)। शनि छठे भाव में अपनी राशि में वक्री हैं — यह अंतर्दशा **श्रम-साध्य** है। आय रुकती नहीं, पर बड़ा उछाल नहीं आता; नौकरशाही, नियम और धैर्य की परीक्षा होती है। गोचर में भी शनि अभी वक्री हैं और आठवें भाव में — यह भाव रुकावट और छुपी हुई कठिनाइयों का है। **फ़रवरी 2027 के बाद जब बुध की अंतर्दशा आएगी**, तब व्यापार, बातचीत और नई साझेदारी से आय का एक नया रास्ता खुल सकता है — बुध वाणी और लेन-देन के कारक हैं।

गोचर में **गुरु अभी कर्क राशि में** हैं और आपके बारहवें भाव में — यह स्थिति अक्टूबर 2026 तक रहेगी। इसके बाद गुरु सिंह (लग्न) में आएँगे, जो एक बड़ा परिवर्तन है। **नवम्बर 2026 से गुरु का लग्न-प्रवेश आपकी आय और अवसर दोनों पर सीधा शुभ प्रभाव डालेगा।**

मुख्य बातें

- **आय का सबसे पक्का रास्ता आपका व्यक्तित्व और प्रतिष्ठा है** — जहाँ आप आगे रहें, वहीं आय अधिक।
- धनेश बारहवें भाव में हैं, इसलिए **बचत सचेत प्रयास से होगी, अपने-आप नहीं** — खर्च पर नज़र ज़रूरी है।
- भाग्य-भाव में बलवान मंगल बताते हैं कि **साहसी और श्रमसाध्य काम में ही असली कमाई है।**
- **फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा और नवम्बर 2026 से गुरु का लग्न-गोचर** — ये दोनों मिलकर आय का एक नया चरण खोलेंगे।
- होरा कुंडली में गुरु, सूर्य, मंगल लग्न में — **धन की असली ताक़त आपके भीतर है, बाहर की परिस्थिति में नहीं।**



धन-वृद्धि का समय (दशा-गोचर)

अ ध्या य 4

अभय शर्मा जी, अभी जो समय चल रहा है वह धन के लिए कुछ माँग करने वाला है — पर इसी कुंडली में आगे के दो-तीन वर्ष ऐसे आने वाले हैं जो धन-वृद्धि के लिए बेहद अनुकूल हैं। **दशा और गोचर दोनों मिलकर एक मोड़ बना रहे हैं, और यह मोड़ फ़रवरी 2027 के बाद से स्पष्ट दिखने लगेगा।**

अभी का दौर — शनि की अंतर्दशा क्या कह रही है

सूर्य महादशा में इस समय शनि की अंतर्दशा चल रही है — फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक। शनि आपकी कुंडली में छठे भाव में अपनी स्वराशि मकर में वक्री हैं — वे षड्रिपु (शत्रु, रोग, ऋण) के भाव के स्वामी भी हैं और सातवें भाव के भी। अर्थात् यह अंतर्दशा धन के स्वाभाविक विस्तार की नहीं, बल्कि **बोझ उठाने, ऋण-प्रबंधन और जोड़-बचत की माँग करने वाली है।** गोचर में भी शनि अभी मीन राशि के आठवें भाव में वक्री हैं — आठवाँ भाव बाधा और रुकावट का घर है। इसलिए इन महीनों में बड़े निवेश या नया व्यापार शुरू करने की बजाय जो धन पहले से है उसे सँजोना अधिक बुद्धिमानी है।

गोचर में शनि 11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे — उस दिन से दिशा बदलेगी और कुछ दबाव कम होगा।

फ़रवरी 2027 — वह मोड़ जो सब बदल देगा

फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा आरंभ होगी और यह दिसम्बर 2027 तक चलेगी। बुध आपके दूसरे भाव (धन) और ग्यारहवें भाव (लाभ) — दोनों के स्वामी हैं। यही धनेश और लाभेश एक साथ हैं। यह दशा-परिवर्तन इस रिपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है।

हाँ, बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं — इसलिए फल थोड़ा धीरे-धीरे आएगा, पर आएगा ज़रूर। बुध का षड्बल 7.56 रूप है जो न्यूनतम 7 से ऊपर है, अवस्था कुमार है — अर्थात् बल बन रहा है। **इस अंतर्दशा में धन के रास्ते खुलेंगे, विशेषतः वाणी, लेखन, बुद्धि-आधारित काम और व्यापारिक सौदों से।** चंद्र कुंडली से देखें तो बुध नवम भाव में हैं — भाग्य का घर; यह और भी अच्छा संकेत है।

योगिनी दशा में भद्रिका (बुध) 2029 तक चल रही है — विंशोत्तरी की बुध अंतर्दशा और योगिनी की भद्रिका का स्वामी एक ही होने से **यह 2027 वाला काल मिश्रित नहीं, बल्कि स्पष्ट रूप से बुद्धि और धन के लिए सक्रिय रहेगा।**

गोचर का साथ — गुरु और मंगल की भूमिका

गोचर में गुरु अभी कर्क राशि में हैं — आपके बारहवें भाव में। बारहवाँ भाव व्यय का है, इसलिए अक्टूबर 2026 तक धन जाता अधिक और आता कम दिख सकता है।

पर नवम्बर 2026 के आसपास गुरु सिंह राशि में प्रवेश करेंगे — आपका लग्न। लग्न में गुरु का गोचर एक बड़ा बदलाव है। गुरु का षड्बल 9.49 रूप और अवस्था युवा — पूरा बल। गुरु आपके पंचम और आठवें के भावेश हैं, और इस कुंडली में पहले भाव में मित्र राशि में विराजमान भी हैं। जब गोचर गुरु भी लग्न में आएँगे तो गजकेसरी योग (जो आपकी कुंडली में पहले से बना हुआ है) और भी सजीव हो उठेगा। **नवम्बर 2026 से अप्रैल 2029 के बीच का समय धन और लाभ दोनों के लिए उत्तर्धारी है।**

मंगल 18 सितम्बर 2026 के बाद मिथुन से आगे बढ़ेंगे और ग्यारहवें भाव से निकलकर भाग्य-भाव की ओर बढ़ेंगे — इससे आय पर जो थोड़ा दबाव है वह भी कम होगा।

होरा कुंडली (D2) देखें तो गुरु और मंगल दोनों कर्क के पहले भाव में हैं — यह धन की जड़ को मज़बूत बताता है। पैसा बनने की संभावना स्थायी है, केवल समय चाहिए।

मुख्य बातें

- **अभी (फ़रवरी 2027 तक):** शनि अंतर्दशा और वक्री शनि का गोचर — बचत करें, नया जोखिम टालें
- **फ़रवरी से दिसम्बर 2027:** बुध अंतर्दशा आते ही धन के रास्ते खुलेंगे — वाणी, व्यापार, बौद्धिक कार्य से आय
- **नवम्बर 2026 के बाद:** गोचर गुरु लग्न में — गजकेसरी योग सक्रिय, यश और धन दोनों की वृद्धि
- **2027-2029:** सूर्य महादशा के अंतिम वर्ष सबसे अनुकूल; अप्रैल 2029 में चंद्र महादशा आएगी — उसमें भाग्य-भाव से मंगल की दृष्टि भाव 4 पर है, घर-संपत्ति की बात भी बन सकती है
- **भद्रिका योगिनी और बुध अंतर्दशा का मेल:** बुद्धि से किया गया हर प्रयास इस काल में रंग लाएगा



संचय, निवेश व संपत्ति

अ ध्या य 5

संचय, निवेश व संपत्ति

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में संचय की क्षमता है — पर यह क्षमता अपने-आप नहीं खुलती, इसे अनुशासन और सही समय की माँग है। होरा कुंडली (D2) और नवांश दोनों मिलकर यही कहते हैं।

संचय की प्रवृत्ति — स्वभाव क्या कहता है

आपका लग्न सिंह है और लग्नेश सूर्य भाव 11 (लाभ-भाव) में हैं — यानी आपकी मूल प्रवृत्ति कमाई की ओर अधिक है, बचाने की ओर थोड़ी कम। **धनेश बुध भाव 12 में शत्रु राशि में बैठे हैं** — यह एक स्पष्ट संकेत है कि धन बाहर जाने की प्रवृत्ति बनी रहती है। कभी खर्च, कभी अनचाहा नुकसान, कभी किसी और के लिए व्यय — पर संचय में रुकावट यहीं से आती है। होरा कुंडली (D2) देखें तो सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र — चारों भाव 1 में हैं, जो शुभ दिखता है; पर राहु और शनि भाव 2 में हैं, जो यह बताता है कि **संपत्ति जोड़ने में विलंब और उतार-चढ़ाव दोनों रहेंगे**।

निवेश की दिशा — कुंडली क्या सुझाती है

भाव 9 में मंगल स्वराशि (मेष) में हैं — और भाव 9 भाग्य व दीर्घकालीन लाभ का भाव है। **यह स्थिति भूमि, संपत्ति या ऐसे निवेश के लिए अनुकूल है जो स्थायी हो और जिसमें मेहनत लगे**। मंगल भूमि-कारक भी हैं और भाव 4 (स्थावर संपत्ति) के भावेश भी — और वे भाव 9 से भाव 12 को देख रहे हैं, जो व्यय को कुछ नियंत्रित करता है। इसलिए ज़मीन, मकान या दीर्घकालीन संपत्ति में निवेश आपके लिए बुध-आधारित बाज़ार (शेयर, स्टॉक) से अधिक सुरक्षित रहेगा। शनि स्वराशि मकर में भाव 6 में हैं — यह परिश्रम से अर्जित धन का संकेत है, पर साथ में यह भी कहता है कि **जल्दी का निवेश या बिना जानकारी के लिया गया जोखिम नुकसान देगा**। धैर्य यहाँ सबसे बड़ा हथियार है।

संपत्ति का समय — कब और कैसे

अभी सूर्य-शनि अंतर्दशा चल रही है (फ़रवरी 2027 तक)। शनि भाव 6 के स्वामी हैं और वक्री हैं — यह समय बड़े निवेश या नई संपत्ति खरीदने के लिए इतना अनुकूल नहीं; इस दौर में **क़र्ज़ से बचना, पुराने खर्चें घटाना और नींव मज़बूत करना** ज़्यादा समझदारी है। **फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी** — बुध व्यापार और निपटान के कारक हैं; यह समय किसी पुरानी संपत्ति का निपटान, नया समझौता या दीर्घकालीन निवेश योजना बनाने के लिए बेहतर रहेगा, हालाँकि बुध की कुंडली-स्थिति (भाव 12, शत्रु राशि) को देखते हुए सावधानी बनी रहे। **अप्रैल 2029 में चंद्र महादशा आएगी** — तब आप लगभग 37 वर्ष के होंगे, और चंद्र भाव 4 के स्वामी हैं (भूमि-भवन-वाहन)। यह दशा संपत्ति के विषय में एक नई अध्याय खोल सकती है।

उपाय — संचय और स्थिरता के लिए

धनेश बुध भाव 12 में हैं और अंतर्दशा-स्वामी शनि वक्री हैं — इसलिए अभी जो सबसे ज़रूरी है वह है नियम और अनुशासन:

- **हर महीने एक निश्चित राशि अलग रखें** — चाहे छोटी हो। शनि के साथ चलने का यही सबसे पक्का तरीका है; जो समय का पाबंद है, शनि उसे देर से पर ज़रूर देते हैं।
- **बुध बल देने के लिए बुध के दिन (बुधवार) कोई भी वित्तीय लेन-देन, योजना या हिसाब-किताब करें** — इससे धनेश सक्रिय होते हैं।
- **माणिक धारण करना इस समय उपयुक्त है** — सूर्य महादशा चल रही है, सूर्य लाभेश-लग्नेश हैं, और माणिक आपका जीवन-रत्न भी है।

यह रत्न आपके koustubhgems.com पर प्रमाणित मिलता है।

मुख्य बातें

- धन बाहर जाने की प्रवृत्ति बनी रहती है — इसे रोकना सचेत प्रयास से ही होगा, स्वतः नहीं।
- भूमि और स्थावर संपत्ति आपके लिए सबसे अनुकूल निवेश-क्षेत्र है।
- फ़रवरी 2027 तक बड़े निवेश से बचें; नींव को मज़बूत करने का समय है।
- अप्रैल 2029 की चंद्र महादशा संपत्ति के लिए एक नया अवसर ला सकती है।
- अनुशासित बचत और धैर्य — यही आपके शनि और बुध दोनों का सबसे सच्चा उपाय है।



आर्थिक सावधानियाँ

अ ध्या य 6

आर्थिक सावधानियाँ

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में धन की नींव मज़बूत है — पर उस नींव में कुछ दरारें भी हैं जिन पर ध्यान न दिया जाए तो बनी हुई रकम भी रेत की तरह फिसल सकती है। ये सावधानियाँ आपको डराने के लिए नहीं, बल्कि उस रास्ते पर रखने के लिए हैं जो आपकी कुंडली पहले से दिखा रही है।

धनेश बारहवें भाव में — जो आता है, वह जाता भी है

आपका धनेश बुध बारहवें भाव (व्यय, हानि, छिपे खर्च का भाव) में बैठा है, और वह भी शत्रु राशि में। इसका सीधा अर्थ है कि **धन आने के बाद उसे रोक पाना आपके लिए सबसे बड़ी चुनौती है।** खर्च अक्सर अनायास होते हैं — कभी किसी के लिए, कभी दिखावे के लिए, कभी अचानक आई परिस्थिति में। बुध पर मंगल की दृष्टि भी बारहवें भाव पर पड़ रही है, जो इस प्रवृत्ति को और तेज़ करती है।

सावधानी: हर महीने एक निश्चित रकम — चाहे छोटी हो — किसी ऐसे खाते में डालें जिसे छूना आसान न हो। खर्च की सूची रखना बुध को शांत करने का सबसे सरल तरीका है।

शुक्र की कमज़ोरी — विलास व उधार से बचाव ज़रूरी

दशमेश और तृतीयेश शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं। अस्त शुक्र एक ख़ास प्रवृत्ति देता है — **सुख-सुविधा, घर की सजावट, यात्रा, उपहार**

या रिश्तों में ज़रूरत से अधिक खर्च। यह प्रवृत्ति बुरी नहीं, पर समय और मात्रा का विवेक न हो तो यही बड़ी बाधा बनती है। शुक्र की नवांश में भी स्थिति (सिंह, बारहवाँ भाव) यही दोहराती है — बाहरी चमक-दमक पर निवेश करने की आदत।

सावधानी: किसी को उधार देने में विशेष सतर्कता रखें — शुक्र और बुध दोनों बारहवें भाव में होने से दिया हुआ पैसा वापस आना कठिन होता है। "ना" कहना सीखना यहाँ सबसे बड़ा आर्थिक कौशल है।

शनि की अंतर्दशा — यह समय परीक्षा का है, जोखिम का नहीं

फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक शनि की अंतर्दशा चल रही है। शनि आपके छठे-सातवें भाव के स्वामी हैं और गोचर में आठवें भाव (मीन) में वक्री बैठे हैं। **यह समय बड़े निवेश, नया कर्ज लेने या साझेदारी में पैसा लगाने के लिए अनुकूल नहीं है।** शनि वक्री होने से पुराने मामलों — पुराना ऋण, अटका हुआ पैसा, पुरानी देनदारी — पर ध्यान देने की माँग करते हैं।

सावधानी: फ़रवरी 2027 तक कोई भी बड़ा वित्तीय निर्णय — नई संपत्ति, बड़ा उधार, व्यावसायिक साझेदारी — सोच-समझकर, और यदि हो सके तो टालकर लें।

मुख्य बातें

- **धनेश बुध बारहवें भाव में** — आय की तुलना में व्यय अधिक होने की स्वाभाविक प्रवृत्ति; हर माह बचत पहले, खर्च बाद में।
- **अस्त शुक्र** — विलास व उधार में सावधानी; दिया हुआ पैसा वापस आना कठिन।
- **शनि अंतर्दशा (अभी से फ़रवरी 2027)** — बड़े जोखिम व नए कर्ज से दूरी; पुराने मामले निपटाने का समय।
- **फ़रवरी 2027 के बाद** बुध की अंतर्दशा में धन-प्रबंधन बेहतर होगा — तब नए वित्तीय निर्णय लेना अधिक अनुकूल रहेगा।
- **रोज़ाना हिसाब-किताब लिखना** — यही बुध का सबसे सरल उपाय है और आपकी कुंडली के लिए सबसे ज़रूरी भी।



धन-वृद्धि हेतु उपाय

अ ध्या य 7

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में धन-वृद्धि के उपाय केवल पूजा-पाठ से नहीं, बल्कि सही ग्रह के साथ सही ढंग से जीने से निकलते हैं। यहाँ तीन ग्रह सबसे अधिक निर्णायक हैं — गुरु, शनि और सूर्य — और इन्हीं के अनुसार उपाय बनाए गए हैं।

गुरु के साथ चलना — यही सबसे बड़ा उपाय है

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में हैं, युवा अवस्था में हैं, और पंचमेश व अष्टमेश दोनों की भूमिका निभा रहे हैं। **गुरु की दृष्टि पाँचवें, सातवें**

और नवम भाव पर है — यानी बुद्धि, भागीदारी और भाग्य, तीनों पर इनका सीधा प्रभाव है। गुरु जब युवा अवस्था में हों तो उनका सबसे बड़ा उपाय है — **जो जानते हैं, उसे बाँटिए**। किसी को पढ़ाइए, कोई कौशल सिखाइए, अपने क्षेत्र में मार्गदर्शन दीजिए। यह दिखावे का दान नहीं — यह गुरु-तत्व को जगाना है, जो आपके धन-भाग्य का मूल कारक है।

- **प्रत्येक गुरुवार** को पीली दाल, गुड़ या केला किसी जरूरतमंद को दीजिए — बिना बताए।
- भोजन में अति कम कीजिए — गुरु संयम से बढ़ते हैं, भोग से क्षीण होते हैं।

शनि के साथ चलना — धन का ताला खोलने की चाबी

शनि आपके छठे भाव में स्वराशि मकर में हैं, अभी इन्हीं की अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चल रही है। **शनि धन नहीं देते — वे धन के लिए पात्रता बनाते हैं।** इस समय सबसे जरूरी है कि हर काम समय पर हो, हर वादा पूरा हो, और जो ज़िम्मेदारी आपके हाथ में है उसे पूरी ईमानदारी से निभाएँ।

- **रोज़ सुबह एक काम तय करें और उस दिन पूरा करें** — यही शनि का सबसे बड़ा उपाय है।
- **शनिवार** को किसी मज़दूर, सेवक या वृद्ध व्यक्ति की सचमुच मदद करें — पैसे से नहीं, समय से।
- शॉर्टकट, उधार व जल्दी-जल्दी निवेश के प्रलोभन से इस दशा में विशेष बचें।

सूर्य — लग्नेश और महादशा-स्वामी

सूर्य महादशा 2029 तक चलेगी। सूर्य ग्यारहवें भाव में हैं — लाभ के भाव में — पर अवस्था मृत है, इसलिए फल क्षीण है। **माणिक धारण करना** इस समय सबसे उचित रत्न-उपाय है — यह आपका जीवन-रत्न भी है और महादशा-स्वामी का भी। सूर्योदय के समय उठना, 15 मिनट खुली धूप में बैठना, और पिता या किसी बड़े से सम्बंध सुधारना — ये छोटे काम सूर्य को जगाते हैं।

मुख्य बातें

- **गुरु** के लिए — ज्ञान बाँटें, संयम रखें, गुरुवार को निःस्वार्थ दान।
- **शनि** के लिए — समय की पाबंदी, ईमानदार श्रम, शनिवार को सेवा; फ़रवरी 2027 तक यही प्राथमिकता।
- **सूर्य** के लिए — सूर्योदय पर उठना, माणिक धारण करने पर विचार (koustubhgems.com पर प्रमाणित उपलब्ध है)।
- बुध व शुक्र दोनों बारहवें भाव में हैं — इनके रत्न (पन्ना, हीरा) इस कुंडली के लिए मना हैं।
- **हर उपाय कल से शुरू हो सकता है** — किसी मुहूर्त की प्रतीक्षा नहीं।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

⚠ यह रिपोर्ट वित्तीय सलाह नहीं है। निवेश संबंधी निर्णय योग्य वित्तीय सलाहकार से परामर्श कर लें।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ धन एवं वित्त रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।